महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय, बडौदा की पी॰ एच॰ डी॰ (हिंदी)

उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध

शोध-विषय

“अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में चेतनावादी स्वर”

शोध-छात्र

आनंद सिंह

नामांकन संख्या-FOA/1455 (27-09-2017)

शोध-निर्देशक

प्रो॰ कनुभाई विछियाभाई निनामा

हिंदी-विभाग, कला-संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बडौदा (गुजरात)

2024

अनुक्रमणिका

अध्याय क्रमांक	अध्याय का शिर्षक	पृष्ठ संख्या
1	2	3
अध्याय -1	अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक अध्ययन	1-60
अध्याय -2	चेतना: अर्थ, प्रकृति और प्रयोग	61-117
अध्याय- 3	अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास-साहित्य में अभिव्यक्ति चेतना का स्वरूप	118-213
अध्याय -4	अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों में अन्तर्भुक्त चेतना का स्वरूप	214-285
अध्याय -5	अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में कलापक्षीय वैशिष्ट्य	286-328
	उपसंहार	329-333
	परिशिष्ट	

शोध-प्रबंध का संक्षिप्त विवरण/ EXECUTIVE SUMMARY

प्रारंभ से ही मेरी रुचि हिन्दी भाषा, साहित्य एवं उपन्यास और कहानी के प्रति रही है। मै अपनी मातृभाषा हिंदी का सम्मान सहृदय पूर्वक किया हूँ और करता रहूंगा। इतना ही नहीं मैंने अपने मेहनत से आज तक हिंदी भाषा व साहित्य के प्रति अपनी रूचि एवं मूल्यों को बरकरार रखा हूँ। जिस प्रकार साहित्य से मानव संस्कारों का विकास होता है।

उसी प्रकार साहित्य की विधाओं में बच्चों से लेकर बुजुर्गों के मन को मोहित करके अपने गुणों से बांध रखने की शक्ति है। मैं भी साहित्य के इस शक्ति से अछूता नहीं रहा।

सम्प्रति जीवन की आवश्यकताओं, अनिवार्यताओं, उपलब्धियों, परिघटनाओं एवं संगतियों-विसंगतियों को सही ढंग से परखने का कार्य आज जिस माध्यम के द्वारा अधिकार पूर्वक सम्पन्न हो रहा हैं वह माध्यम है साहित्य की अनेक विधाएं विशेषकर उपन्यास। वर्तमान समय में लेखक उपन्यासों और कहानियों के माध्यम से समाज की विसंगतियों को उजागर करने का कार्य कर रहे है। यदि हम ऐसा कहे तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। वास्तव में यह ऐसा सूत्र है जो मानव और समाज को विश्व से जोड़ता है।

अनुसंधान पद्धति-

अनुसंधान पद्धति केवल एक शोध अध्ययन के व्यावहारिक पक्ष को संदर्भित करती है। या शोध कार्य करने के विशेष नियम या विधि जो व्यावहारिक युक्तियुक्तता और तर्कसंगति पर आधारित हो। एक शोधकर्ता वैध और विश्वसनीय परिणाम सुनिश्चित करने के लिए व्यवस्थित रूप से एक अध्ययन डिज़ाइन करता है जो अनुसंधान के लक्ष्यों, उद्देश्यों और अनुसंधान के प्रश्नों को उद्घाटित करता है। अनुसंधान की विभिन्न पद्धतियाँ है जिनमें साहित्यिक अनुसंधान, वर्णनात्मक अनुसंधान, विवरणात्मक अनुसंधान, विश्लेषणात्मक अनुसंधान तथा तुलनात्मक अनुसंधान आदि का प्रयोग मैंने इस शोध-प्रबंध में किया है।

साहित्यिक अनुसंधान पद्धति-

साहित्यिक अनुसंधान के विभिन्न पक्ष हो सकते हैं जैसे भाव सम्बन्धी साहित्यिक शोध कविता, कहानी, उपन्यास, नाटक, यात्रा साहित्य, निबंध, महाकाव्य आदि भाव जगत की विशिष्ट अवस्था से जन्म लेते हैं। इनमें लेखक के भावों, चिंतन, रसात्मक अभिव्यक्ति और अलौकिक आनंद की अनुभूति होती है। वैयक्तिक-निर्वैयक्तिक भावनाओं की अनुभूति, जन्म, अभिव्यक्ति भी साहित्यिक शोध का विषय है। राष्ट्रीय भावना एवं समाज से संबंधित विषय पर भी अच्छे शोध के आधार हो सकते हैं। कल्पना एवं भावनात्मक तत्वों को आधार में ग्रहण कर भी शोध की विषय वस्तु बना सकते है।

इन परिस्थिति में शोधार्थी समाज, विज्ञान, नीति विज्ञान, मनोविज्ञान आदि विषयों पर शोध कर सकता है। विचारात्मक, वर्णनात्मक, भावनात्मक अनुसंधान किसी भी साहित्य की पृष्ठभूमि में सामान्यतः कोई विचारधारा अवश्य विद्यमान होती है। अभिव्यक्तिपरक शोध साहित्य का अनिवार्य उपकरण अभिव्यक्ति पक्ष है। इसे कलानुसंधान, भाषानुसंधान आदि में परिगणित किया जा सकता है।

हिंदी साहित्य में किसी भी काल खण्ड को लेकर अनेक अनुसंधान किए गए हैं। यह दो प्रकार के हो सकते हैं। जैसे किसी रचनाकार की रचना प्रवृत्तियों को लेकर अनुसंधान या फिर किसी कालखंड की विशिष्टता को आधार रूप में ग्रहण कर शोध अध्ययन रचनाकार की काव्य प्रवृत्तियों का उदहारण दिया जा सकता है।

वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति-

वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति का सम्बन्ध प्राचीन से न होकर वर्तमान काल से होता है। इस पद्धति का प्रयोग सम्प्रति में शिक्षा, शिक्षालय तथा शिक्षण आधारित तथ्यों का अध्ययन एवं व्याख्या अन्य विशिष्ट प्रकार के अनुसंधान पद्धति में की जाती है जिसे वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति कहा जाता है। शोध विशेषज्ञों के अनुसार शिक्षा सम्बंधित स्थितियाँ, प्रचलित व्यवहार विश्वास दृष्टिकोण जो स्थापित हो चुके है, प्रक्रियाएँ जो गतिशील है, सम्प्रति नयी दिशाएं एवं प्रवृतियाँ जो निरंतर विकसित हो रही है का अध्ययन वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति में किया जाता है। संक्षेप में कहा जा सकता है कि वर्णनात्मक अनुसंधान पद्धति से तात्पर्य एक ऐसे अनुसंधान पद्धति से है जिसके आधार पर हम किसी शैक्षिक संस्था, परिस्थिति, व्यवस्था, प्रविधि, स्थिति, जन समुदाय आदि के वर्तमान स्वरूप का व्यवस्थित अध्ययन करते है, वर्तमान स्तर की वैध जानकारी प्राप्त करते है।

विवरणात्मक अनुसंधान पद्धति-

विवरणात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग रचना में किसी दी गई परिघटना से सम्बंधित जानकारी प्राप्त करने के लिए की जाती है। इनका सम्बन्ध सम्प्रति में विद्यमान स्थितियों अथवा संबंधों, मौजूदा चलनों, वर्तमान मान्यताओं, दृष्टिकोणों अथवा रुखों अथवा जारी प्रक्रियाओं से और उनके प्रभाव और विकासशील चलनों से होता है।संक्षेप

में कहा जा सकता है कि ये अध्ययन के समय पाई जाने वाली स्थिति की प्रकृति का निर्धारण करती है। विवरणात्मक अनुसंधान का उद्देश्य किसी परिस्थिति में परिवर्तियों अथवा स्थितियों के संदर्भ में क्या पाया जाता है, इसका वर्णन करता है।

विश्लेषणात्मक अनुसंधान पद्धति-

इस पद्धति का प्रयोग निष्कर्ष निकालने और निष्कर्ष तक पहुंचने के लिए जानकारी एकत्र करने, विश्लेषण करने और व्याख्या करने की प्रक्रिया है। शोध के उद्देश्य और आपके पास मौजूद तथ्यों के आधार पर हम विभिन्न तरीकों का उपयोग करके विश्लेषणात्मक शोध कर सकते हैं।

तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति-

तुलनात्मक अनुसंधान पद्धति का प्रयोग हमेशा से विश्व के सम्पूर्ण साहित्य में अभिव्यक्तपरक मानवीय चेतना के अध्ययन से होता आया है। ज्ञान एवं अनुभूति के क्षेत्र में सर्वमान्य मान्यताओं को उद्घाटित कर एकता का सामन्जस्य पूर्ण उदाहरण तुलनात्मक शोध द्वारा प्रस्तुत किया जा सकता है। तुलनात्मक शोध अनेक विधियों द्वारा किया जा सकता है जैसे काव्य कृतियों की भाषा का तुलनात्मक शोध, भाषानुसंधान संबंधी तुलनात्मक शोध, एक समयावधि की रचनाओं में तुलनात्मक अध्ययन का फिर समान विषय वस्तु संबंधी रचनाओं में तुलनात्मक अनुसंधान।

हिंदी भाषा भारत की संपर्क भाषा है अतः इसमें तुलनात्मक अनुसंधान के द्वारा विकास और समृद्धि के अवसर और भी प्राप्त हो सकते हैं। वर्तमान समय में एक से अधिक भाषाओं और लिपियों की जानकारी साहित्यिक उपलब्धि की दिशा में जीतनी कारगर है उतनी ही राष्ट्रीय एकता को मजबूत बनाने में भी। अतः तुलनात्मक अनुसंधान इस दृष्टि से भी महत्वपूर्ण है।

सुविधा की दृष्टि से मैंने अपने शोध-प्रबंध को निम्नलिखित विवरण के अनुसार वर्गीकृत करके कार्य पूरा किया है। जिससे विषय का प्रतिपादन भली प्रकार सम्भव और सम्यकरूपेण हो सके।

शोध-प्रबंध का विवरण -

प्रस्तुत शोध-प्रबंध को पांच अध्यायों में विभाजित किया गया है। प्रत्येक अध्याय के अन्त में निष्कर्ष तथा सन्दर्भ सूची दी गई है। सभी अध्यायों के अंत में निष्कर्ष के रूप में उपसंहार दिया गया है। उसके बाद ग्रंथानुक्रमणिका के अंतर्गत आधार-ग्रंथ तथा पत्र-पत्रिकाओं की सूची को आकारांतक्रम में दी है।

अध्याय: प्रथम

अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक अध्ययन

शोध प्रबंध के प्रथम अध्याय के अंतर्गत अब्दुल बिस्मिल्लाह का व्यक्तित्व एवं कृतित्व: एक अध्ययन पर मैं प्रकाश डाला। अभिव्यक्ति और युगबोध का ही सम्मिलित परिणाम है- बिस्मिल्लाह जी का समय, व्यक्तित्व जिसमें सम्मिलित है इनका संबंध गद्य और पद्य साहित्य से है- मुसे बोलने दो, छोटे बुटों का बयान, वली अहम्मद और करीमन बी की कविताएँ तथा किसके हाथ गुलेल आदि शीर्षक काव्य संग्रहों में संग्रहित असंख्य कविताएँ जहाँ बिस्मिल्लाह जी के कवि व्यक्तित्व की अभिपुष्टि प्रदान करती हैं, वहीं टूटा हुआ पंख, कितने-कितने सवाल, रैन बसेरा, अतिथि देवो भव, जीनीया के फूल, रफ-रफ मेल तथा शादी का जोकर नाम कहानी संग्रहो में संग्रहित अगणित कहानियों और समर शेष है, झीनी-झीनी बीनी चदरिया, जहरबाद, दंतकथा, मुखड़ा क्या देखे, रावी लिखता है तथा अपवित्र-आख्यान, कुँठाव आदि उपन्यास इनके कथाकार व्यक्तित्व को प्रसिद्धि के उत्कर्ष तक ले जाते हैं। वैसे तो बिस्मिल्लाह जी ने नाटक, आलोचना, अनुवाद, निबंध एवं संपादन कार्य आदि विधाओं के लेखन में भी अपनी सिद्धहस्त लेखनी को सरपट दौड़ाया है लेकिन इनकी रचनाधर्मिता ने कहानी और उपन्यास संसार में अधिक विचरण किया है, जिसके कारण ही इन्हें कथाकार की श्रेणी में रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। बिस्मिल्लाह जी की कहानियों और उपन्यास केवल मात्रात्मकता में ही नहीं बल्कि गुणात्मकता में भी समकालीन रचनाकारों की सापेक्षता में बीस सिद्ध होते हैं। कहानी और उपन्यास कला के तत्वों तथा समालोचना के वर्तमान मानदण्डों की कसौटी पर कसने के बाद स्पष्ट हो जाता है कि बिस्मिल्लाह जी की कथाधर्मिता प्रेमचंद जी की परम्परा का ही संशोधित-परिवर्तित विस्तार है तथा इस संदर्भ में वे अपने समसामयिकों से मीलों आगे हैं।

अध्याय-दो

चेतना: अर्थ, प्रकृति और प्रयोग

शोध प्रबंध के द्वितीय अध्याय के अंतर्गत चेतना: अर्थ, प्रकृति और प्रयोग पर प्रकाश डाला गया। जिसमें यह बताया गया कि साहित्यकार की चेतना जितनी अधिक व्यापक होगी, उसकी साहित्य सर्जनाएँ भी उतनी ही अधिक देशकालातीत, प्रासंगिक एवं जनहितैषी होंगी। रचनाकार के लिए चेतना विषयों को समझने और पाठकों को समझाने का कार्य करती है। ऐसे में जिस साहित्य-सर्जक की चेतना जितनी अधिक उन्नत किस्म की होगी, वह अपनी सर्जनाओं के लिए उतने ही अधिक समाज हितैषी विषयों का चयन कर सकेगा। मनुष्य के जीवन-क्षेत्र की भाँति ही चेतना की भी विविध प्रकृतियाँ, मसलन- सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक, साहित्यिक आदि होती है, जिनमें रचनाकार एतद्विषयक विषयों का ज्ञान रखने के साथ ही उसके प्रति सजग भी होता है। चेतना की आवश्यकता केवल साहित्यकार जैसे मनीषियों को ही नहीं अपितु साधारण मनुष्यों को भी पड़ती है जिसके आधार पर ही वे लोकव्यवहार करते हैं। समसामयिक कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह में साहित्य-सर्जक और सामाजिक दोनों रूपों में चेतना की विविध प्रकृतियों अंतर्भुक्त रही हैं जिन्हें हम उनके कथा-साहित्य में भली भाँति देख सकते हैं। बिस्मिल्लाह जी अपने समय के समाज अर्थ, राजनीति, धर्म, संस्कृति और साहित्य आदि सभी जीवन क्षेत्रों के प्रति न केवल सजग रहे हैं बल्कि इनके गहन अध्येयता और मीमांसक भी रहे है तभी तो इन्हें इन क्षेत्रों में व्याप्त संगतियों-विसंगतियों, प्रवृत्तियों और परिस्थितियों आदि का सूक्ष्मातिसूक्ष्य अनुभवजन्य ज्ञान था।

यदि बिस्मिल्लाह जी के उपन्यासों पर दृष्टिपात किया जाए तो परिलक्षित होता है कि इसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक आदि सभी प्रकार की चेतनताएँ अंतर्भुक्त रही हैं। चाहे भावात्मक प्रकृति के उपन्यास हो या फिर सामाजिक, धार्मिक प्रकृति के सभी उपन्यासों में उन्होंने अपनी स्वानुभूतियों के साथ-साथ अपने देशकाल और वातावरण की परिस्थितियों, प्रवृत्तियों, चित्तवृत्तियों तथा

आवश्यकताओं आदि को शब्दों के माध्यम से उड़ेल दिया है, और यह सब मानव-जीवन के विविध श्रोतों के गहन ज्ञान और अनुभव आदि से ही सम्भव हो सका है। आर्थिक चेतना की प्रकृति में अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास गरीबी, भुखमरी, दरिद्रता, वस्त्रहीनता, आवास की समस्या, सरकारी योजनाओं की विफलता, भ्रष्टाचार, शोषण, दमन, उत्पीड़न, बेरोजगारी, बंधुआ मजदूरी, सहकारी व्यवस्था या न्यून मजदूरी की समस्या, महंगाई, बेरोजगारी, पूँजीवादी तथा और पारिवारिक भरण-पोषण की समस्या को अभिव्यक्ति प्रदान करते दिखाई देते हैं।

अध्याय -तीन

अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास-साहित्य में अभिव्यक्ति चेतना का स्वरूप

शोध प्रबंध के तृतीय अध्याय के अंतर्गत अब्दुल बिस्मिल्लाह के उपन्यास-साहित्य में अभिव्यक्ति चेतना का स्वरूप पर प्रकाश डाला गया है। बिस्मिल्लाह जी के उपन्यासों में प्रक्षिप्त राजनीतिक चेतना, राजनीतिक जीवन की विसंगतियों और विद्रूपताओं के अभिव्यक्तिकरण से संबंधित रही है जिसमें चुनावी भ्रष्टाचार, वोट बैंक की राजनीति, नेताओं की बादा-खिलाफी, चुनावी घोषणाओं का खोखलापन, दलगत राजनीति, दलबदल प्रणाली, जबरन मतदान, वोटो की खरीद-फरोख्त, चुनावी राजनीति, चुनाव जीतने के लिए नेताओं द्वारा साम्प्रदायिक दंगे करवाना, सरकारी योजनाओं का गबन, प्रशासनिक भ्रष्टाचार, नेताओं और प्रशासन की मिलीभगत से जनता को लूटना आदि मर्मातक वर्णन-विवेचन शामिल है। इसी तरह बिस्मिल्लाह जी के उपन्यासों में व्यक्त धार्मिक चेतना हिन्दू एवं मुस्लिम दोनों धर्मो में व्याप्त धार्मिक आडम्बरों, कर्मकाण्डो, अंधविश्वासों, कुरीतियों, कुप्रथाओं, मान्यताओं, विश्वासो आदि के वर्णन-विश्लेषण से संबंधित रही है। इसमें बलिप्रथा, मंदिरों-मस्जिदों पर लगने वाले मेलो, मनौतियों, विश्वासों, धर्म के नाम पर होने वाले हिन्दू-मुस्लिम दंगों तथा विशेष रूप से उल्लिखित किया जा सकता है। बिस्मिल्लाह जी सांस्कृतिक चेतना की प्रसारता, भारत की सांस्कृतिक विविधता के सापेक्ष ही रही है जिसमें हिन्दू और मुस्लिम समाज के रहन-सहन, खान-पान, वेश-भूषा, आभूषण, पर्व, त्यौहार, मेले, लोकगीत व लोककथाएँ तथा लोकनृत्य

आदि की अभिव्यक्ति सम्मिलित रही है।

अध्याय -चार

अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों में अन्तर्भुक्त चेतना का स्वरूप

शोध प्रबंध के चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत अब्दुल बिस्मिल्लाह की कहानियों में अन्तर्भुक्त चेतना का स्वरूप पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। बिस्मिल्लाह जी की कहानियों भी चेतना के विभिन्न स्वरूपों से संपन्न रही हैं। इनमें भी विभिन्न प्रकार की चेतनाओं के उन्ही घटकों की अभिव्यक्ति हुई है जिनकों हम उनके उपन्यासों में देख चुके हैं। स्वानुभूतियों, सामाजिक चित्तवृत्तियों, परिस्थितियों आदि का समन्वय करते हुए कहानीकार ने अपनी कहानियों में आर्थिक चेतना की प्रगति में गरीबी, भुखमरी, अकिंचनता, वस्त्रहीनता, आवास विहीनता, सरकारी योजनाओं की विफलता, बाजारवाद पूंजीवाद, सहकारी व्यवस्था, ऋण की समस्या, बेकारी-बेरोजगारी, मजदूरों का शारीरिक-मानसिक शोषण, बालकाय बंधुआ मजदूरी आदि का चित्रण किया है जबकि उसकी सामाजिक चेतना जातिगत भेदभाव, लिंगगत एवं वर्गगत समस्या, स्त्रियों की दयनीय स्थिति, तलाक, मेहर, बहुपत्नी प्रथा आदि सामाजिक कुरीतियों के वर्णन, अशिक्षा, अनैतिक यौनाचार, विवाहेतर सम्बंध आदि के प्रकटीकरण से संबंधित रही है। इसी तरह बिस्मिल्लाह जी की कहानियों की राजनीतिक चेतना वोट बैंक की राजनीति, चुनावी घोषणाओं के खोखलेपन, जबरन मतदान करवाने, वोटों की खरीद-फरोख्त, राजनीति और प्रशासन की मिली भगत, दलगत राजनीति, दलबदल, वोटों के लिए करवाये जाने वाले साम्प्रदायिक दंगों तथा राजनीति में महिलाओं और सामान्य व्यक्तियों की सहभागिता के अभाव आदि से संबंधित रही है जबकि धार्मिक चेतना, धार्मिक कट्टरता, अंधविश्वास, कर्मकाण्ड, धार्मिक आयोजन, मंदिर-मस्जिद विवाद, साम्प्रदायिकता और कुरीतियों-कुप्रथाओं के अभिव्यक्ति से सरोकार रखती है। इसी तरह से बिस्मिल्लाह जी की कहानियों की सांस्कृतिक चेतना के अंतर्गत हिंदू, मुस्लिम समाज के रहन-सहन, खान-पान, वेशभूषा, आभूषण, परम्पराएँ, रीति-रिवाज, मैले, उत्सव, पर्व, त्योहार, लोकगीत, लोककथा एवं लोकनृत्य आदि का वर्णन सम्मिलित किया जा सकता है। इन सभी का विस्तृत वर्णन शोध प्रबंध में किया गया है।

अध्याय पाँच

अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में कलापक्षीय वैशिष्ट्य

शोध प्रबंध के पंचम अध्याय के अंतर्गत अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में कलापक्षीय वैशिष्ट्य पर विस्तृत प्रकाश डाला गया है। जिसमें यह बताया गया है कि बिस्मिल्लाह जी के कथासाहित्य के शिल्पगत वैशिष्ट्य की बात करें तो इसमें जितनी अधिक विविधता अंतर्भुक्त रही है उतनी ही अनन्यतम और कसावटीपन भी दृष्टिगोचर होता है। भाषा की प्रवाहमयता निरंतरता और कसावट जहाँ इनके भावपक्ष को सार्थक एवं उद्देश्यपूर्ण बनाता है वहीं तत्सम्, तद्भव, देशज एवं विदेशज शब्दों के अतिरिक्त कहावतों, मुहावरों और लोकोक्तियों के प्रयोग से बिस्मिल्लाह जी के कथा-साहित्य के कला पक्ष में चार-चाँद लग गए हैं। अभिधा, व्यंजना तथा लक्षणा नामक तीनों शब्द-शक्तियों के प्रयोगवाली उसकी भाषा रचना और रचनाकार दोनों के उद्देश्य को पूर्ण करने में सफल रही है। बिस्मिल्लाह जी ने अपने ध्येय के अनुरूप ही अपनी कथात्मक रचनाओं में आत्मकथात्मक, वर्णनात्मक, विवेचनात्मक और व्याख्यात्मक आदि शैलियों का प्रयोग किया है। विषय और उद्देश्य के अनुरूप कथा-साहित्य में शैली का चयन और प्रयोग इनकी रचनाओं के भावपक्ष और कलापक्ष के बीच के संबंधों को और भी अधिक प्रगाढ़ बना देता है।

उपसंहार

अंत अपने शोध प्रबंध के सभी अध्यायों के अंत में निष्कर्ष के रूप में आकलन किया गया है। हिन्दी साहित्य-संसार रूपी नक्षत्राकाश के समसामयिक परिदृश्य को अपनी संख्यातीत विधीय महत्व की सर्जनाओं द्वारा प्रदीप्त करने वाले ख्यातिलब्ध कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह बहुआयामी व्यक्तित्व के धनी रहे हैं। अपनी नवोन्मेषशालिनी प्रज्ञाजन्य नैसर्गिक प्रतिभा एवं उत्कृष्ट सृजनशीलता के माध्यम से समकालीन साहित्यरुपी उपवन को इन्होंने विभिन्न विधाओं में की गयी रचनाओं रूपी लता-प्रतानो से सुगंधित बनाए रखा है। इनके व्यक्तित्व में अंतर्भुक्त इन अनन्य प्रवृत्तियों में इनकी अंतर्वृत्तियों के साथ-साथ देशकाल और वातावरण की परिस्थितियों का भी महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। कवि, कथाकार, नाटककार एवं विमर्शकार का एक साथ

अभिधान धारण करने वाले बिस्मिल्लाह जी के व्यक्तित्त्व निर्माण में जीवन के भोगे हुए कटु यथार्थ के साथ ही युगबोध की भी विशिष्ट महत्ता रही है। एक तरफ जहाँ पारिवारिक एवं आर्थिक समस्याओं, असंवेदनाओं, अभावग्रस्तताओं आदि ने इनकी स्वानुभूति को कटु बनाकर उसे अभिव्यक्ति की सीमा तक पहुँचाया, वहीं दूसरी तरफ युगबोध के रूप में बीसवीं शताब्दी के नौवे दशक से लेकर वर्तमान सदी के दूसरे दशक तक भारतीय उपमहाद्वीप में जीवन के सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक और सांस्कृतिक परिक्षेत्र में प्रकीर्णित असंख्य विसंगतियों और विद्रूपताओं ने बिस्मिल्लाह जी के युगबोध को रचनाओं में परिणत कर दिया। साथ ही इसे साथ ही इसे समृद्ध बनाने के लिए क्या-क्या किया जा सकता है इन बिंदुओं पर भी चर्चा की गई है।

परिशिष्ट

अंत में अनुक्रमणिका के अंतर्गत संदर्भ ग्रंथ सूची, पत्र-पत्रिकाओं का विवरण दिया है। जिसका मैंने अपने शोध प्रबंध में प्रयोग किया है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1- चितामणि भाग-दो, काव्य में रहस्यवाद, संपादक विश्वनाथ प्रसाद मिश्र

2- अब्दुल बिस्मिल्लाह का कथा-साहित्य, डॉ॰ वासीम मकानी

3- किसके हाथ गुलेल, अब्दुल बिस्मिल्लाह

4- समीक्षा, त्रैमासिक, अक्टूबर-दिसम्बर-1987, संपादक- गोपाल राय

5- समकालीन कथा-साहित्य का एक रूप संपादक- चन्द्रदेव यादव

6- दस्तावेज, मासिक, जनवरी-1998, संपा०- विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

7- दंतकथा, अब्दुल बिस्मिल्लाह

8- समाज कल्याण, मासिक, फरवरी-1997

9- मुखडा क्या देखें, अब्दुल बिस्मिल्लाह, आवरण पृष्ठ से उद्धत

10- रावी लिखता है अब्दुल बिस्मिल्लाह, आवरण पृष्ठ से उद्धत

11- अपवित्र-आख्यान, अब्दुल बिस्मिल्लाह, कवर पृष्ठ से उद्धत

12- कुठाँव, अब्दुल बिस्मिल्लाह, कवर पृष्ठ से उद्धत

13- संस्कृत-हिन्दी शब्दकोश, संपादक- धर्मेद्र कुमार गुप्ता

14- नालंदा विशाल शब्द सागर, संपादक- नवल

15- मानविकी परिभाषा कोश संपादक- डॉ० नगेन्द्र

16- प्रेमचंद निबंध साहित्य में सामाजिक चेतना, अर्चना जैन

17- डिक्शनरी ऑफ फिलोसॉफी, संपादक- आई पोलाव

18- मानवीकी परिभाषा कोश, डॉ० नगेन्द्र

19- इनसाइक्लोपीडिया ऑफ ब्रिटानिका, भाग-6

20- अभिनव मराठी शब्दकोश, अग्निहोत्री

21- प्रेमचंदोत्तर उपन्यासो में सामाजिक चेतना डॉक्टर अमर सिंह लोधा

22- प्रभाकर माचवे के उपन्यासो में सामाजिक चेतना, मंजूर सैय्यद

23- जहाज का पंक्षी, इलाचंद जोशी

24 बृहदारण्यक उपनिषद - 2/4/14

25- केनोपनिषद 1/3

26- तैत्तरीय उपनिषद्- 2/8

27- सर्वदर्शन संग्रह माधवाचार्य हिन्दी अनुवाद- उमाशंकर शर्मा ऋषि चौखम्बा विद्याभवन वाराणसी

28- भारतीय दर्शन: आलोचना और अनुशीलन मोतीलाल बनारसीदास, संपादक-

चन्द्रधर शर्मा

29- शरीरिक भाष्य आचार्य शंकर

30- वेदांत परिभाषा धर्मराजाध्वरीन्द्र, व्याख्या- गजानन्द शास्त्री मुसलगांवकर चौखम्भा विद्याभवन वाराणसी

31- साठोत्तरी हिंदी कविता में जनवादी चेतना, डॉक्टर नागेन्द्र

32- हिंदी साहित्य कोश, हर्षनारायण, संपादक- धीरेन्द्र वर्मा

33- बीसवीं शती की सामाजिक चेतना, डॉक्टर सोमनाथ शुक्ल

34- हिन्दी उपन्यास: सामाजिक चेतना, डॉक्टर कुंवरपाल सिंह

35- प्रेमचन्दोत्तर उपन्यासों में सामाजिक चेतना, डॉक्टर अमर सिंह लोधा

36- बीसवीं शती की सामाजिक चेतना, डॉक्टर सोमनाथ शुक्ल

37- उपन्यासकार भगवतीचरण वर्मा : एक अध्ययन, डॉ. ललित अरोड़ा

38- हिन्दी साहित्य में सामाजिक चेतना, डॉक्टर रत्नाकर पाण्डेय

39- हिन्दी उपन्यासो में महाकाव्यात्मक चेतना, डॉक्टर सुषमा गुप्त

40- आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी के उपन्यास और आधुनिक चेतना, मंजु तंवर

41- साहित्य का उद्देश्य, प्रेमचंद

42- हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल

43- आलोचना, संपादक, मधुरेश

44- काव्य के रूपं, डॉ० गुलाबराय

45- साहित्यालोचन डाँ० श्यामसुंदरदास

46- हिन्दी उपन्यास: उद्भव और विकास, हेतु भारद्वाज

47- हिंदी उपन्यास, संपादक, सुषमा प्रियदर्शनी

48- साठोत्तरी हिन्दी उपन्यासों में राजनीतिक चेतना, कृष्ण कुमारचन्द्र

49- Amald catle - Am inturaduction to the Study of Literature.

50- Loud D. Sesil-Hardy the best Novelist

51-हिन्दी साहित्य: उद्भव एवं विकास, डॉ० हजारीप्रसाद द्विवेद्वी

52- मेकिंग ऑफ लिटरेचर, स्काट जेम्स

53- आधुनिक हिन्दी साहित्य, डॉ० नन्द दुलारे वाजपेयी

54- काव्यशास्त्र, डॉ० भगीरथ मिश्र

55- साहित्यालोचन, डॉ० श्याम सुंदर दास

56- झीनी-झीनी बीनी चदरिया, अब्दुल बिस्मिल्लाह

57- अनदेखे अंधेरों की कथा, लेख-चंद्रकला त्रिपाठी

58- जहरबाद, अब्दुल बिस्मिल्लाह

59- समर शेष है, अब्दुल बिस्मिल्लाह

60- समकालीन कथा-साहित्य: एक स्वप्न, संपादक- चंद्रदेव यादव

61- समर शेष है, अब्दुल बिस्मिल्लाह

62- मुखड़ा क्या देखे, अब्दुल बिस्मिल्लाह

63- कथाकार अब्दुल बिस्मिल्लाह:मूल्यांकन के विविध आयाम, संपादक- डॉ० एम फिरोजखान, डॉ० ए० के० पाण्डेय

64- अब्दुल बिस्मिल्लाह के कथा साहित्य में संघर्षरत आम आदमी, डॉ० शेख सरफोद्दीन फक्रोद्दीन

65- हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

66- हिन्दी कहानी: परम्परा और प्रयोग, डॉ० हरदयाल

67- फणीश्वरनाथ रेणु के साहित्य में लोकतत्व, डॉ० मालटी शिंदे

68- हिन्दी कहानी : उद्‌भव विकास, सुरेश सिन्हा, अशोक प्रकाशन दिल्ली, संस्करण 1967

69- द न्यू शॉर्ट स्टोरी थ्योरीज, एडि०- चार्लेस ई मे, ओहियो यूनिवर्सिटी प्रेस

70- कहानी का रचना विधान, संपादक- जगन्नाथ प्रसाद शर्मा, हिंदी प्रचार पुस्तकालय, वाराणसी, संस्करण-1961

71- कहानी: स्वरूप और संवेदना राजेन्द्र यादव, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली, संस्काण-2000